महावीर जयन्ती स्मारिका-१९६४ (फोल्डर नं. ९४०४१)
सम्पादक – श्री चैनसुखदास न्यायतीर्थ

मुख्य टाइटल
अनुक्रमणिका
सन्देश -- ७
सम्मतियाँ ---१३
प्रकाशकीय -- १६
सम्पादकीय -- १७
भगवान महावीर का स्तवन --- १९
भगवान महावीर एक सिद्धान्त थे – पं. चैनसुखदास --२१
हिन्दी विभाग
भारतीय संस्कृति को जैन संस्कृति का योगदान – डॉ. छबिनाथ त्रिपाठी ------------------------ १
जैन धर्म की प्राचीनता – डॉ. ज्योति प्रसाद जैन -- ९
भारतीय भाषाओं को जैन साहित्यकारों की देन – मुनि श्री बुद्धमलजी ------------------------ १५
जैनधर्म और राज्य व्यवस्था – श्री रामावतार शर्मा -- ३०
जैन दर्शन और विज्ञान के आलोक में आरोह-अवरोहशील विश्व मुनि श्री महेन्द्रकुमारजी
द्वितीय -- ३५
वेदों में तीर्थंकरों की स्तुति – मुनि श्री महेन्द्र कुमारजी प्रथम -------------------------------- ३७
पांच मुक्तक (कविता) – श्री तन्मय बुखारिया -- ४३
धर्म का मापदण्ड-आध्यात्मिकता – डॉ. रतनकुमार जैन -------------------------------------- ४४
संवत्सरी पर्व का सांस्कृतिक महत्त्व – श्री बद्रीप्रसाद पंचोली ---------------------------------- ५२
जैन धर्म का उदय और विकास – डॉ. पुरुषोत्तमलाल भार्गव ---------------------------------- ५८
संदेश काव्य परम्परा में जैन कवियों का योगदान – प्रो. शान्तिकुमार पारख ------------------- ६१
महावीर और गोशालक – मुनि श्री नगराजजी -- ६५
महयंदिण मुनि – डॉ. वासुदेवसिंह -- ६८
बैराठ स्थित मुगलकालीन जैन मन्दिर – डॉ. सत्यप्रकाश ------------------------------------ ७१
अपरिग्रह और समाजवाद – श्री बिरधीलाल सेठी -- ७३
जैन अभिलेखों का ऐतिहासिक महत्त्व – श्री रामवल्लभ सोमानी ------------------------------ ७८
महावीर का अनैकांतिक अहिंसा-दर्शन – श्री युगल जैन -------------------------------------- ८३
धर्म व संस्कृति की आत्मा – श्री सत्यदेव विद्यालंकार --------------------------------------- ८६
जैन कवि नवल और उनकी भक्ति – डॉ. सोमनाथ गुप्त-------------------------------------- ९४
ढूंढाड़ी जैन गद्य साहित्य – श्री गंगाराम गर्ग -- ९७
जैन कवियित्री जड़ावजी की काव्य साधना – डॉ. नरेन्द्र भानावत ---------------------------- १०१
महाश्रवण महावीर का दिव्य जीवन – डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल --------------------------- १०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिंसा का व्यापक चिंतन और आचार – श्री जवाहिरलाल जैन -------------------------------- १११
भगवान महावीर की मंगलमय वाणी – श्री अगरचन्द नाहटा ----------------------------------११३
नैतिक सद्गुण – डॉ. ईश्वरचन्द्र शर्मा -- ११६
जैन धर्म का आत्मतत्व और कर्म सिद्धान्त – पं. चैन सुखदास न्यायतीर्थ ----------------------११२
भारतीय दर्शनों में चेतनास्तित्व – आचार्य रमेशचन्द्र शास्त्री ---------------------------------- १२६
महावीर वर्धमान – राजकुमारी लुहाड़िया -- १३५
तुम्हें मिला जब जन्म -- १३६

English Contents

Lord Mahavira and the Mission of Jainism – Lothar Wendel -------------------------------------- 1
The Role of the Idea of Action (Kriyavada) in Jaina Philosophy – G C Pande --------------- 4
Jainism in Modern Times – Wilfried Nolle -- 6
War and Ahimsa Ideology – Dr. Bool Chand -- 10
The Ancient Town of Rajorgarh – Dr. Kailash Chand Jain --------------------------------------- 14
Sramanic Foundations of Ancient Egypt – Sh. Ram Chandra Jain ---------------------------- 17
Sramana Tradition and Vedic Literature – Dr. S K Gupta -- 22
Practicability of Ahimsa (Non-Violence) – Sh. Rajmal Sanghi ---------------------------------- 28
The Eight fold Path of Yoga and Jainism – Dr. Kamal Chand Sogani ------------------------ 38

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org